1962 का चीनी–सोवियत सौदा ?
तथ्य कुछ और कहते हैं।

चीनी उपन्यासकार जंग चैंग जिसने अत्यधिक लोकप्रिय उपन्यास "द वाइन्ड स्वॉन्स" लिखा और उनके पति, ब्रिटिश इतिहासकार से जॉन हैलीडे ने मिलकर "द ग्रेट हेल्समैन" की चाटुकारी आत्मकथा से कहीं भिन्न पुस्तक "माओ : द अननोन स्टोरी" की रचना की। कहा जाता है कि वे दस वर्षों तक कठोर परिश्रम औद दुःसाध्य शोध में लगे रहे और यह किताब दी जो माओ ओर उसके समय के बारे में कई नयी जानकारियों पर प्रकाश डालती है। किताब के कई सनसनीखेज "रहस्योद्घाटनों' में से एक 1962 में भारत पर चीन के "आक्रमण" की पूर्वसंध्या पर हुई एक विजिंग–मास्को सौदा के बारे में है। जैसे भी हो यह इतिहासकार की तथ्यों को मिलाने की असमर्थता और उपन्यासकार की कल्पना से कुछ अधिक बताता मालूम होता है। इस तरह वे लिखते हैं "अक्टूबर 1962 में ख्रूस्चेव चुपके से क्यूबा में अणु–मिसाइलें फैला रहा था। संयुक्त राज्य अमेरिका से मुकाबले के खतरे को देखते हुए वह निश्चित कर लेना चाहता था कि माओ उसे पीठ पीछे धोखा नहीं देगा। उसने माओ के आगे एक हड्डी फेंकने का फैसला कर लिया, एक बड़ी हड्डी 'चीन को भारत पर आक्रमण करने के लिए क्रेमलिन का आशीर्वाद।" घटनाओं का मालक्रम इससे बिल्कुल मेल नहीं खाता है।

जब 8 सितम्बर को विवादास्पद थागला पर्वतश्रेणी के उत्तर में सेनजैंग की छोटी सी भारतीय सेना चौकी को पी.एल.ए. ने घेर लिया। तब चीन नें हमे चुनौती दी। हमारी सरकार ने तुरंत इसे स्वीकार कर लिया और तब के सुरक्षा मंत्री वी.के.कृष्ण मेनन ने उस समय के COAS जनरल पी. एन.थापर की सलाह को अस्वीकृत करते हुए भारतीय सेना को चौकी छुड़ाने का आदेश दिया। फिर भी सेना स्पष्ट रूप से वास्तविक धरातल और सामरिक वास्तविकता को समझते हुए आगे नहीं बढ़ी और रूकी रही। 30 सितम्बर को प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू अभी एक विदेश दौरे से लौटे थे और यह जानकर क्रुद्ध हो गये कि सकरकारी आदेशों का पालन नहीं हुआ। उन्होनें थापर की चेतावनी को फिर से दरकिनार कर दिया और चिल्लाए, "मैं परवाह नहीं करता हूँ अगर चीनी दिल्ली तक भी पहुँच जाएँ लेकिन उन्हें थागला से बाहर खदेड़ना है।" 17 अक्टूबरको 7 ब्रिगेड ने चीनियों को थागला से निकालने के लिए अनिच्छापूर्वक आक्रमण शुरू किया।

अमेरिका ने 14 अक्टूबर को नाम्का चू नदी के पार जबाबी हमला कर दिया। 23 अक्टूबर तक तीन रेजिमेंट की एक चीनी PLA सेना नें 7 ब्रिगेडियर जॉन दाल्वी (बन्दी बना लिए गये) के नेतृत्व की भारतीय सेना के 7 ब्रिगेडियर का एक बड़ा अंश मार दिया और तवांग से मात्र 10 मील दूर रह गयी थी। 24 अक्टूबर को PLA तवांग में निर्विरोध प्रवेश कर गयी। उस रात उन्होनें अब अरूणाचल प्रदेश कहे जाने वाले NCFA के दूसरी छोर पर स्थित वालोंग के दूसरी तरफ भी ध्यान देना शुरू कर दिया। तवांग और वालोंग दोनों अरूणाचल प्रदेश में काफी अन्दर थे। यहाँ तक पश्चिमी भाग में भी, लेफ्टीनेंट दृढ़ आधार के बावजूद, चीनियों ने 21 अक्टूबर तक यहाँ उनके दावे की रेखा के भीतर के उस सारे भाग को हथिया लिया। इसके बाद सारे क्षेत्रों के युद्ध में मंदी आ गयी।

24 अक्टूबर को चीन ने एक वक्तव्य जारी किया और अनुमानित प्रत्यारोपों के बाद तीन प्रस्ताव रखे। वे थे –(I) दोनो पक्ष नवम्बर 1959 की वास्तविक नियंत्रण की रेखा (LCA) का सम्मान करें और आपती सेनाओं को उस रेखा से 20 किलोमीटर पीछे ले जाएँ। (II) अगर भारत (I) के लिए राजी होती हो तो चीन पूर्वी क्षेत्र में मैकमोहन रेखा के उत्तर में पीछे हटने के लिए राजी है।(यह महत्वपूर्ण था क्योंकि PLA अरूणाचल प्रदेश में काफी अन्दर तक आ गयी थी। (III) दोनों प्रधानमंत्री एक मित्रवत निपटारे के लिए नयी दिल्ली में या पीकिंग में मिलें। ठीक उसी दिन नई दिल्ली द्वारा एक बयान जारी करके इन प्रस्तावों को अस्वीकृत कर दिया गया। 4 नवम्बर को, चाउ एन–लाई नें चीनी प्रस्तावों की सिफारीश करते हुए नेहरू को पत्र लिखा और नेहरू से उसे स्वीकार करने का निवेदन किया। 7 नवम्बर को नेहरू ने एक प्रस्ताव के साथ प्रतिकार कर दिया कि चीन को अपने स्थान पर वापस लौट जाना चहिए जहाँ वे 8 सितंबर को थे और बातचीत इसके बाद ही शुरू होगी।

इस नवीकृत कुटनीतिक झड़प के दौरान दो बड़े परिवर्तन हुए 28 अक्टूबर को क्यूबा मामले पर रूस ने अपने कदम पीछे खीच लिए और अपनी मिसाइलें हटाने को राजी हो गया। 29 अक्टूबर को अमेरिकी राजदूत जॉन केनीथ गॉलब्रेथ ने अपने मित्र जवाहर लाल नेहरू को फोन किया और “भारत की आवश्यकतानुसार किसी भी प्रकार की सैन्य सहायता” देने का प्रस्ताव रखा। यह पाँच दिन के अन्दर पहुँचना शुरू हो गया और जल्द हीं प्रत्येक दिन 8 USA और RAF जहाजों से बीसों टन हथियार उतरने लगे। यह विडम्बना हीं है कि इसके केवल कुछ सप्ताह पहले हीं

जवाहरलाल नेहरू ने भारत की पश्चिमी हथियारों की मदद लेने की सलाह को अस्वीकृत करते हुए सैन्य सहायता को एक सैनिक गुट के साथ स्वीकार करने बराबर माना था और यह घोषणा की थी भारत इसे कभी स्वीकार नहीं करेगा "अगर हमारी सरहद पर महाबिपत्ति आ जाए तब भी नहीं।" जो विपत्ति 7 ब्रिगेड पर आयी थी वह नवम्बर में गर्वित 4 डीविजन पर आने वाली विपत्ति कीतुलना में बहुत छोटी थी।

पूर्व में तवांग और वालींग तथा चुशुल के दरवाजे तक चीन के तीब्र गति से बढ़ने के बाद आयी शांति राष्ट्रीय नेताओं को आत्मनिरीक्षण करने और उसमें कुछ यथार्थता लाने की बजाय उन्हें कल्पना की नई उड़ानों में ले गयी। हार ने उद्धृत राष्ट्रवाद और सुखामास की लहर को बढ़ावा दिया जो उसके बाद केवल एक बार कारगिल युद्ध में दिखा। लोकसभा ने "आपातकाल के प्रति भारतीय जनता की आश्चर्यजनक और स्वाभाविक प्रतिक्रिया " की प्रशंसा की । डा. राम मनोहर लोहिया हमेशा इस कथन के साथ मौजूद रहते थे कि "हमारे शहीद जवानों का खून एक नये, शक्तिशाली राष्ट्र का बीज बन रहा है जो हमारे देश में जन्म ले रहा है।" तब एक और आश्चर्य कि नेहरू ने टिप्पणी की "हम इसमें कभी इतने अच्छे नहीं रहे।"

नामका चू में जिन गलतियों के कारण दुखद पराजय हुई उनपर ध्यान देने की बजाय हमारे नेताओं ने यह मान लिया कि चीनियों को हराया जा सकता है। नेता असलियत से मुँह मोड़ते मालूम होते थे। 12–14000 फीट की ऊँचाई पर लड़ रहे जवानों के पास ठंढ से लड़ने के लिए केवल सूती कपड़े और एक–एक कंबल था और बेहतर तैयारी के साथ आने वाले चीनियों से लड़ने के लिए प्रत्येक जवान के पास 40 बोर की प्राचीन. 303 राइफलें थी। पश्चिम के छोटे हथियारों के भारी मात्रा में आने के बाद इस वास्तविकता में थोड़ा सा परिवर्तन हुआ। विराम लगाने ओर अगली ड़ाई के लिए सैन्य नेताओं को जगह और समय चुनने का विकल्प देने की बजाय संसद और भारतीय सेना दोनों के राजनेताओं नें दूसरी पारी की लड़ाई के लिए दबाव डाला।

सेना और आपूर्ति को सुलभता को देखते हुए सेना ने माँग की उन्हें बोमडिला में केन्द्रित किया जाए। इसे देखते हुए 1959 में लेफ्टीनेंट जनरल थोरेट ने NEFA के लिए सेना का त्रिस्तरीय रक्षा योजना तैयार की और कम से कम चार ब्रिगेड की मांग की। 1961 में लेफ्टीनेंट जनरल एल. पी.सेन जिन्होंने पूर्वी क्षेत्र का नियंत्रण थोरेट से लिया था मांग रखी कि इस कार्य को करने के लिए उन्हें दो डिवीजनों के पास लड़ने के लिए केवल दो ब्रिगेड थे। लेकिन नई दिल्ली में हाल हीं

के नियुक्त मेजर जनरल ने आदेश दिया कि तवांग के नजदीक और बोमडिला से 60 मील आगे स्थित सेना को हर हाल में बचाना चाहिए। राजनेता इस नुकसान की भरपाई नहीं कर सके।

14 नवंबर 1962 को प्रधानमंत्री का 73वाँ जन्मदिन था और कौल इस बात का जानते थे उन्होंने एक उपयुक्त उपहार देने की सोंची। उन्होनें चीनियों को मैकमोहर रेखा के दूसरी तरफ ढकेलने के लिए वालोंग में आक्रमण कर दिया। संभवतः उनके द्वारा दिये गये आदेशों में यह सर्वाधिक नादानी भरा आदेशा था। रिमा में PLA का पूरा डिवीजन इन्तार में था जबकि हमारी सेना नें जल्दबाजी में दो डिवीजन तैयार किया और वालोंग में केवल तीन बटालियनों को 11 ब्रिगेड के रूप में रेखांकित किया गया था। PLA ने जबरदस्त बदला लिया। 11 ब्रिगेड के सैनिक बहादुरी से लड़े लेकिन 17 नवंबर तक उनका सफाया हो गया जबकि दिल्ली में समाचारपत्र आक्रमण का स्वागत कर रहे थे।

चीन का सामान से ला में करने के फैसले से बोमाडिला में सेना की कमी शुरू हो गयी, जिसकी रक्षा अब केवल 6 कंपनियाँ कर रहीं थीं। कौल और डी.एम.ओ ब्रिगेडियर पलित ने चीनियों के बड़ी संख्या में से ला को बाहर–बाहर पार कर जाने की संभावना पर विचार नहीं किया। लेकिन उन्होनें यही किय। उन्होंने बेली पथ कहे जाने वाले रास्ते को पकड़ा जो ब्रिटिश अधिकारी के नाम पर रखा गया है जिसने तवांग के लिए पारंपरिक याकहर्डर मार्ग की पुनः खोज की थी। से ला में अपनी मुख्य रक्षा के साथ केन्द्रित 4 डीवीजन विरल रूप से फैले हुए थे और PLA ने इसके पीछे से धावा शुरू कर दिया। जब 62 ब्रिगेड को से ला खाली करने केलिए आदेश मिले तब तक बहुत देर हो चुकी थी। वे खत्म कर दिए गए थे और इसके कमांडर ब्रिगेडीयर होशियार सिंह जिन्हें बाद में परम वीर चक्र से पुरस्कृत किया गया लड़ते हुए 17 नवंबर को शहीद हो चुके थे। अगले दिन दिराग जोग का विभागीय मुख्यालय धराशाही हो गया। 20 नवंबर को बोमडिल भी पराजित हो गया। 1962 की घोर पराजय पूरी हो चुकी थी। जिसकी कहानी हमने खुद लिखी थी।

हाल के वर्षों में चीन–भारत पुनर्मेल मजबूत हुआ है। ठीक उसी समय हम एक नई भू–सामरिक प्रतिस्पर्धा की बढ़ती हुई रूपरेखा देख सकते हैं। अपने आर्थिक पतन के फलस्वरूप के हट जाने के बाद अब संयुक्त राज्य अमेरिका अब आर्थिक रूप तक चमकते चीन का मुकाबला करने की तैयारी कर रहा है। भारत अचानक उनके लिए अग्रिम पंक्ति का राज्य हो गया है। अगर चैंग और हैलीडे एक दशक के शोध की गुणवता पर संदेह होता है बल्कि इस पर भी आश्चर्य होता है कि पुरानी शत्रुता को इस तरीक से पुनः प्रदर्शित करने की क्या जरूरत है।

मोहन गुरूस्वामी

Email-mguru@sify.com

जुलाई 12, 2005